''ग्रामीण सामुदायिक जीवन एवं कार्यशैली में आधुनिकीकरण के बढ़ते प्रचलन का प्रभाव''

*गुंजन त्रिपाठी एवं ** डॉ0 (श्रीमती) सुषमा पाठक
*शोध छात्रा–समाजशास्त्र ** शोध पर्यवेक्षक प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
राजा मोहन गर्ल्स पी0जी0 कालेज, अयोध्या
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

शोध–सारांश

भारत गाँवों का देश है, कृषि यहाँ का मुख्य व्यवसाय रहा है, सरल जीवन की पहचान बनाये हुए गाँव भी अब नगरीय जीवनशैली के प्रभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं बच सके हैं। जब कोई समाज पुरातन मूल्यों का परित्याग कर नवीन मूल्यों को आत्मसात करता है तो उसमें कहीं न कहीं आधुनिकीकरण की भूमिका अवश्य होती है। ग्रामीण जीवन मूल्यों का उपभोक्तावादी संस्कृति के माध्यम से जो प्रभाव परिलक्षित हो रहा है उसमें संचार साधनों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। यही कारण है कि ग्रामीण जनसंख्या अब नगरीय जनसंख्या से प्रभावित होकर प्राथमिक व्यवसाय में परिवर्तन के साथ–साथ नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवसन आधुनिकीकरण का ही परिणाम कहा जा सकता है।

शब्द संकेत– आत्मसात, प्रवसन, कृत्रिमता, प्रतिमान, अन्वेषण, गतिशीलता, सहभागिता, गत्यात्मकता, वैश्वीकरण, मनोवृत्तियाँ।

शोध पत्र

सामाजिक संरचना सामाजिक व्यवस्था के जाल के रूप में परस्पर व्यवस्थित स्वरूप यथा– प्रतिमानों, समितियों, संस्थाओं एवं मूल्यों के साथ मिलकर एक जाल का निर्माण करते हैं। जाल के धागे के रूप में जुड़ी ईकाइयाँ क्रमबद्ध रूप से सामाजिक संरचना की शक्ति को प्रदर्शित करती है। इसी प्रकार ग्रामीण सामाजिक संरचना भी कई ईकाइयों जैसे– विवाह, परिवार, वंश, गोत्र, नातेदारी, मूल्यों, पदों, जाति, धर्म तथा राजनैतिक एवं आर्थिक समूहों के वर्ग साथ मिलकर समाज के बाह्य स्वरूप को प्रकटकर सामाजिक संरचना बनाते हैं।

ग्रामीण सामाजिक संरचना में सम्मिलित सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संस्थानों में यह सभी पक्ष समाहित है जो ग्रामीण समुदाय को अलग इकाई के रूप में परिलक्षित करता है। वर्तमान ग्रामीण समुदाय में भी स्तरीकृत समाज के दर्शन होते हैं। यहाँ भी विभिन्न व्यक्तियों के बीच विभिन्न आधारों पर उच्च एवं निम्न की स्पष्ट रेखा खींचते हुए दिखाई पड़ते हैं। ग्रामीण सामुदायिक जीवन सदा सर्वदा सादगी, सरल जीवन और प्रकृति के साथ निकटता का प्रतीक होता है। वहीं नगरीय संस्कृति में जटिलता, दिखावापन, कृत्रिमता एवं प्राकृतिक पर्यावरण के संयोजन के पोषक कहे जाते हैं। ग्रामीण समुदाय के विषय में मैकाइवर एवं पेज ने लिखा है कि ''किसी छोटे या बड़े समूह के सदस्य जब साथ–साथ इस प्रकार रहते हैं कि वे किसी विशेष प्रकार के हित में ही भागीदार न होकर सामान्य जीवन की आधारभूत स्थितियों में भाग लेते हैं तो ऐसे समूह को समुदाय कहा जाता है।[1]

वर्तमान परिस्थिति में आधुनिकीकरण का प्रभाव मात्र नगरीय समाज तक सीमित न होकर ग्रामीण समुदाय की ओर अग्रसर है। ग्रामीण जीवन शैली के स्वभाव में भी अब परिवर्तन दिखाई पड़ने

लगा है। आज ग्रामीण समाज का कोई भी पक्ष आधुनिकीकरण के प्रभाव से वंचित नहीं दिखाई पड़ता है। वर्तमान ग्रामीण संरचना के विभिन्न पक्षो– परिवार, विवाह, प्रथा, परम्परा, मनोवृत्ति, विचार एवं कार्यशैली को आधुनिकीकरण के प्रभाव से मुक्त नहीं समझा जा सकता है। सड़कों एवं संचार संसाधनों के जाल में ग्रामीण जीवन शैली में तीव्रगति से परिवर्तन दृष्टिगत होता है।

इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए एस0सी0 दुबे का कथन है कि ''आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एक आन्दोलन है जिसमें परम्परागत क्रम से निश्चित एच्छिक प्रौद्योगिकी की ओर अग्रसर होते है। सामाजिक संरचना मूल्य एवं नियमों से सम्बन्धित है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से आधुनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकी और विज्ञान के नये अन्वेषणों के मध्य सामंजस्य स्थापित करती है।[2]

ग्रामीण समुदाय की सबसे सशक्त पक्ष जाति व्यवस्था में भी अब आधुनिकीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है। आज के आधुनिक परिवेश में अब उच्च जाति के लोग निम्न एवं छोटी जातियों के साथ भोजन करना स्वीकार कर लिया है। नगरीय क्षेत्रों की जाति व्यवस्था में अब अनेकों परिवर्तन दिखाई पड़ते है। जहाँ सम्बन्ध और खान–पान सम्बन्धी अनेक प्रतिबन्धों में छूट अथवा ढीले पड़ गये हैं। छोटी जातियों की अनेकानेक नागरिक एवं धार्मिक असुविधाओं में भी परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।[3] आधुनिकीकरण शब्द आधुनिक शब्दों से निर्मित हुआ है। आधुनिकीकरण का मूल आशय गत्यात्कता से है जो परम्परावादी विचारों, मान्यताओं एवं आदर्शों का परित्याग कर नवीन विचारों एवं मूल्यों को ग्रहण करना है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया वैश्विक संस्कृति का प्रसार है जो उन्नत प्रविधि, ज्ञान, विज्ञान, दृष्टिकोण एवं सामाजिक सम्बन्धों के निमित्त नवीन विचारधारा, जन सम्बन्धों के लिए न्याय की भावना के आधार पर विकसित हुई है जिसके परिणाम स्वरूप आधुनिक मूल्यों की स्थापना हुई है। भारत में संचार साधनों, शिक्षा के प्रसार में वृद्धि, नगरीकरण, औद्योगीकरण, यातायात के साधन एवं सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है।[4]

डेनियल लर्नर के कथानानुसार– ''आधुनिकीकरण परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका सम्बन्ध मुख्य रूप से विचारों एवं मनोवृत्तियों के तरीकों में परिवर्तन, नगरीकरण में वृद्धि, साक्षरता में वृद्धि, प्रति व्यक्ति आय का अधिक होना तथा राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि जैसे परिवर्तन से होता है।''[5] कार्ल मैन हीम ''सामाजिक संरचना परस्पर क्रिया करती हुई सामाजिक शक्तियों का जाल है, जिससे अवलोकन और चिन्तन की विभिन्न प्रणालियों का जन्म होता है।''[6] आधुनिकीकरण गतिशीलता परम्परा के परिवर्तन का परिणाम होती है, इसी परिवर्तन की दृष्टि में आज आधुनिकता काल के लिए परम्परा हो जायेगी। योगेन्द्र सिंह ने कहा है कि ''आधुनिकीकरण एक सांस्कृतिक प्रयास है, जिसमें तार्किक अभिवृत्ति, सार्वभौम दृष्टिकोण, परानुभूति, वैज्ञानिक वैश्विक दृष्टिकोण, मानवता, प्रोद्योगिकी एवं प्रगति आदि सम्मिलित है।''[7]

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध अध्ययन अम्बेडकरनगर जनपर के अकबरपुर तहसील के तीन गाँवों सीहमई, अन्नावा एवं दुन्नापुर की सम्पूर्ण जनसंख्या में से 100–100 उत्तरदाताओं का दैव निदर्शन विधि से चयन किया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोतों के अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीय स्त्रोतों में सरकार एवं गैर सरकारी रिकार्ड, रिर्पोट, समाचार पत्र, पत्रिकाओं का भी संकलन किया गया है।

शोध परिकल्पना–

1. ग्रामीण सामुदायिक जीवन आधुनिकीकरण से प्रभावित होती है।

2. ग्रामीण सामुदायिक जीवन की परम्परागत शैली में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।
3. ग्रामीण सामुदायिक जीवन की कार्यशैली अब संचार–साधनों के प्रभाव में है।
4. संचार साधनों के प्रभाव से सामाजिक संरचना के घटक भी प्रभावित हो रहे हैं।
5. ग्रामीण सामुदायिक जीवन में ग्रामीण महिलाऐं अब सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से परम्परा के बाहर निकल रही है।
6. नगरीय संस्कृति का प्रभाव ग्रामीण समुदाय पर स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है।
7. ग्रामीण समुदाय पर परम्परागत मूल्यों की अपेक्षा आधुनिक मूल्यों को अपना रहा है।
8. ग्रामीण सामुदायिक जीवन एवं कार्यशैली अब नवीन तकनीकी को अपनाकर आगे बढ़ रहा है।

उपयुक्त संदर्भों के साथ ग्रामीण सामुदायिक जीवन एवं कार्यशैली में आधुनिकीकरण का प्रभाव ग्रामीण परिवेश पर किस प्रकार पड़ रहा है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या ग्रामीण परिवेश में आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण जीवन शैली में परिवर्तन आया है? निम्न सारणी द्वारा प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयास किया गया है–

सारणी संख्या–01

क्र.सं.	जीवन शैली में परिवर्तन	सीहमई		अन्नावाँ		दुन्नापुर		सम्पूर्ण योग
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	
1	हाँ	65	65.5	60	60.0	62	62.0	187.0
2	नहीं	25	25.0	35	35.0	30	30.0	90.0
3	कह नहीं सकते	10	10.0	05	05.0	08	08.0	23.0
	योग	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**300.00**

सारणी संख्या–01 में ग्रामीण परिवशे में आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण जीवन शैली में परिवर्तन के प्रति उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण का वितरण किया गया है। इस सारणी का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि सीहमई गांव के कुल 100 उत्तरदाताओं में से 65.0 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि हाँ ग्रामीण परिवेश में आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण जीवन शैली में परिवर्तन आया है तथा 25.0 प्रतिशत उत्तरदाता नहीं में उत्तर देते हैं जबकि 10.0 प्रतिशत उत्तरदाता कुछ कह नहीं सके।

ग्रामसभा अन्नावा के कुल 100 उत्तरदाताओं में से 60.0 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि हाँ ग्रामीण परिवेश में आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण जीवन शैली में परिवर्तन आया है तथा 35.0 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते हैं जबकि मात्र 05.0 प्रतिशत उत्तरदाता कुछ कह नहीं सके। इसी क्रम में ग्रामसभा दुन्नापुर के कुल उत्तरदाताओं में से 62.0 प्रतिशत उत्तरदाता स्वीकार करते हें कि हाँ ग्रामीण परिवेश में आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण जीवन शैली में परिवर्तन आया है तथा 30.0 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते है जबकि 8.0 प्रतिशत उत्तरदाता इस संदर्भ में कुछ कह नहीं सके।

अतः सम्पूर्ण अध्ययन से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि वर्तमान आधुनिक ग्रामीण परिवेश में आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण जीवन शैली में स्पष्ट रूप से परिवर्तन आया है, रूढ़ियों, परम्पराओं, रीति–रिवाजों के प्रति भी उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण में परिवर्तिन दिखाई पड़ता है।

सारणी संख्या–02

क्या आप मानते हैं कि शैक्षिक समानता के कारण ग्रामीण परिवेश में भी धार्मिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है?

क्र.सं.	धार्मिक दृष्टिकोण	सीहमई		अन्नावाँ		दुन्नापुर		सम्पूर्ण योग
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	
1	परम्परागत	48	48.0	52	52.0	45	45.0	145.0
2	प्रगतिशील	30	30.0	35	35.0	38	38.0	103.0
3	आधुनिक	22	22.0	13	13.0	17	17.0	52.0
	योग	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**300.00**

सारणी संख्या–02 में उत्तरदाताओं की शैक्षिक समानता के कारण ग्रामीण परिवेश में धार्मिक दृष्टिकोण में परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण का वितरण किया गया है? सारणी का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक दृष्टिकोण रखने वाले उत्तरदाताओं में सीहमई के कुल 48.0 प्रतिशत धार्मिक दृष्टिकोण को परम्परागत 30 प्रतिशत उत्तरदाता प्रगतिशील तथा 22.0 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक दृष्टिकोण रखते हैं।

ग्राम सभा अन्नावा के कुल 100 उत्तरदाताओं में से 52.0 प्रतिशत परीम्परागत 35.0 प्रशित उत्तरदाता प्रगतिशील एवं 13.0 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक विचारधारा के पोषक हैं। इसी क्रम में ग्राम सभा दुन्नापुर के सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से शैक्षिक दृष्टिकोण रखने वाले कुल 45.0 प्रतिशत प्रगतिशील विचार रखने वाले कुल 38.0 प्रतिशत उत्तरदाता हैं, जबकि 17.0 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक विचार रखते हैं।सम्पूर्ण अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि शैक्षिक समानता के कारण ग्रामीण परिवेश में भी धार्मिक दृष्टिकोण में परिवर्तन के प्रति सर्वाधिक 145 (48.3 प्रतिशत) उत्तरदाता आज भी परम्परागत विचारों के पोषक हैं।

सारणी संख्या–03

क्या आप मानते हैं कि शैक्षिक समानता के कारण ग्रामीण परिवेश में भी धार्मिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है?

क्र.सं.	संचार साधनों के प्रति दृष्टिकोण	सीहमई		अन्नावाँ		दुन्नापुर		सम्पूर्ण योग
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	
1	हाँ	38	38.0	45	45.0	52	52.0	135.00
2	नहीं	42	42.0	40	40.0	38	38.0	120.00
3	कह नहीं सकते	20	20.0	15	15.0	10	10.0	45.00
	योग	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**300.00**

सारणी संख्या–03 में उत्तरदाताओं की सामुदायिक जीवन की कार्यशैली अब संचार साधनों के प्रभाव में है? के प्रति दृष्टिकोण का वितरण किया गया है? इस सारणी के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सीहमई ग्राम के कुल 100 उत्तरदाताओं में 38.0 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि हाँ सामुदायिक जीवन शैली पर संचार साधनों का प्रभाव पड़ा है। 42.0 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते हैं जबकि

20.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कुछ नहीं कहा। ग्राम सभा अन्नावा के कुल 100 उत्तरदाताओं में से 45.0 प्रतिशत उत्तरदाता स्वीकार करते हैं कि हाँ सामुदायिक जीवन कार्यशैली में संचार साधनों का प्रभाव पड़ा है तथा 40.0 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते है, जबकि 15.0 प्रतिशत उत्तरदाता कुछ भी नहीं कह सके।

इसी प्रकार ग्राम सभा दुन्नापुर के कुल 100 उत्तरदाताओं में से 52 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि हाँ सामुदायिक जीवन की कार्यशैली अब संचार साधनों के प्रभाव में है तथा 38 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते है, जबक 10.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कुछ नहीं कहा।

सम्पूर्ण अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि सामुदायिक जीवन शैली अब संचार साधनों के प्रभाव में है कि प्रति सर्वाधिक 135 (45.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने इसका समर्थन किया है।

संदर्भ–सूची

1.मैकाइबर एवं पेज, समाज, पृ0 9

2.शर्मा, सुरजन सिंह एवं द्वितीय आर0एन0, सामाजिक परिवर्तन, हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा, पृ0 165

3.पी0एन0 प्रभु, हिन्दू सोशल आर्गनाइजेशन, पापुलर प्रकाशन, बाम्बे, पृ0 217

4.मोहम्मद नूर एवं लवानिया, एम0एम0, भारतीय समाज, विस्तृत अध्ययन, कालेज बुक डिपो, जयपुर, पृ 453

5.www.kailosheducation.com

6.Karl, Mannheim, Ideology and utopia, Routledge, London. p.-44-46

7.मौर्य, रामवृक्ष, समाज, दर्शन और राजनीति, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ 124